ढाणीं की वाणी

अंक - 1

दिसम्बर 2003

जिला परियोजना प्रबन्धन इकाई

(डी. पी. आई. पी.)

बाराँ (राजस्थान)

राजस्थान सरकार ने ग्रामीण विकास के लिए बहुत सी योजनाऐं लागू की हैं। शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में की गई अथक कोशिशें रंग लाई है। फिर भी इक्कीसवीं सदी की दहलीजपर हमारे सामने अब नई चुनौतियाँ, नई मंजिले हैं। यही सोचकर राजस्थान सरकार ने एक नवीन और दूरदर्शी योजना लागू की है, जिसका नाम है – ''जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना'' (डी.पी.आई.पी)। इस परियोजना का मूल मंत्र है ''साझा प्रयास – सम्पूर्ण विकास''। यह परियोजना विश्व बैक के सहयोग से राज्य के सात जिलों में लागू की जा रही है। यह जिले हैं – बाराँ, चुरू, दौसा, धौलपुर, झालावाड़, टोंक और राजसमन्द।

डी.पी.आई.पी. में नया क्या है :–

गरीबी उन्मूलन की अन्य योजनाओं की तुलना में डी.पी.आई.पी. में निम्नलिखित नवीनताऐं समावेशित है :–

1. यह योजना मात्र लक्ष्य प्राप्त करने पर आधारित न होकर आवश्यकता पर आधारित है।
2. यह योजना व्यक्ति विशेष के स्थान पर समूह की सहभागिता पर आधारित है।
3. डी.पी.आई.पी. योजना में राशि सीधे समान रूचि समूह के बैंक खाते में हस्तांतरित की जाती है।
4. इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित परियोजना के प्रारम्भ से ही भागीदार रहे, ऐसा यह पहला प्रयास है। वित्तीय प्रबन्धन और कार्य का क्रियान्वयन इत्यादि सभी कार्य समान रूचि समूह द्वारा किया जाता है।

राज्य सरकार ने ग्रामीण गरीबों तक बेहतर पहुँच बन सके इसलिए गैर सरकारी समाजसेवी संस्थाओं को परियोजना में शामिल किया गया है। जिन गाँवों में यह योजना चलायी जा रही है। उनमें जरूरतों और समस्याओं के आधार पर समान रूचि समूहों का गठन किया जा रहा है। सशक्त और सक्रिय समान रूचि समूह ही साझा प्रयास की नींव है। समान रूचि समूह अपनी आवश्यकताओं को आँकेंगें, इसी आधार पर उप–परियोजनाओं का चुनाव करेंगे और फिर उन्हें चलाएँगें। उप–परियोजनाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक मार्ग–दर्शन, प्रशिक्षण और हर तरह का सहयोग सरकार तथा गैर समाजसेवी संस्थाओं की ओर से दिया जा रहा है।

यूँ बजने लगी शहनाई.....

राजस्थान के बारां जिले के सहरिया बाहुल्य क्षेत्र, शाहबाद के ग्राम शुभघरा की बदली तस्वीर बताती है कि इस गांव के अधिकांश परिवार सहरिया जनजाति से संबंधित है। इन परिवारों की आय का मुख्य स्त्रोत मेहनत-मजदूरी करना है। गांव के कुछ परिवारों के पास बहुत कम भूमि है, जो कृषि योग्य नही है।

इस गांव के 10 सदस्यों ने मिलकर माँ सरस्वती समान रूचि समूह का गठन किया। सह सभी सदस्य गरीबी की रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवारों से हैं। सभी अपने परिवार का गुजर-बसर करने के लिए दूसरे के यहां मजदूरी करते हैं और मजदूरी से प्राप्त आय से अपने परिवार का पालन-पोषण भी सही ढंग से नहीं कर पाते।

जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना (डी.पी.आई.पी.) से जुड़कर इन ग्राम वासियों ने मिलकर अपना सामाजिक एवं आर्थिक स्तर ऊँचा उठने के लिए बैण्ड बाजा की आय सृजन आधारित गतिविधि का चयन किया। चूंकि पूर्व में इस गांव में व आसपास के क्षेत्र में बैण्ड बाजा उपलब्ध नहीं होने से ग्रामीणों को शादी-ब्याहों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं अन्य समारोह में बैण्ड बाजा उपलब्ध नहीं हो पाता था, जिससे ग्रामीणों को असुविधा का सामना करना पड़ता था। समूह द्वारा चयनित गतिविधि हेतु ग्यारह हजार का अंशदान इकट्ठा किया गया और बैण्ड बाजा संबंधित आवश्यक सामग्री क्रय करके कार्य शुरू कर दिया। अब इस समूह को आगे से आगे काम मिलना प्रारम्भ हो गया है और सभी सदस्य कार्य करने से उल्लासित है। आय के नये स्त्रोत मिल जाने से सभी सदस्यों को आर्थिक सम्बल मिलने लगा है।

जैविक खेती

बहुत अधिक मात्रा में उर्वरकों या रासायनिक खादों के प्रयोग और कृत्रिम नाशक–जीवनाशकों के ज्यादा इस्तेमाल से जल, वायु और मिट्टी संदूषित हो सकते है। नाशकजीवों में इन रसायनों को सहने की क्षमता विकसित हो जाती है और जो नाशक जीव पहले गैर महत्वपूर्ण होते हैं वे आगे चलकर फसलों के लिए विनाशकारी हो जाते हैं। इसका मिट्टी की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। समय के बीतने के साथ मिट्टी में कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जस्ते, तांबे और लोहे आदि की कमी हो सकती है। परिणाम स्वरूप किसानो के लिए वर्ष दर वर्ष उच्च पैदावार लेना कठिन हो जाता है।

मिट्टी, वायु और पानी को प्रदूषित किए बिना और मिट्टी की उर्वरकता कम किए बिना फसल की उच्च पैदावार प्राप्त करने की विधा है ''जैविक खेती''।

जैविक खेती क्या है?

जैविक खेती का उद्देश्य रसायनों पर निर्भरता को कम करते हुए उत्पादकता को बढ़ाना और साथ ही प्राकृतिक संसाधनों को भी सुरक्षित रखना है। यह हमारे पूर्वजों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले तरीकों की आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पुनर्खोज है। यह किसी विशेष फसल की अपेक्षा पूरी मिट्टी को पोषण प्रदान करती है।

इस विधि में कृत्रिम रसायनों का प्रयोग बहुत कम कर दिया गया है। अब संसाधनों के संरक्षण और खेत में उपलब्ध सभी संसाधनों, पशु, मनुष्य और पौधों के व्यर्थ बचे पदार्थों के उपयोग पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

पारिस्थितिक प्रणाली का चक्र

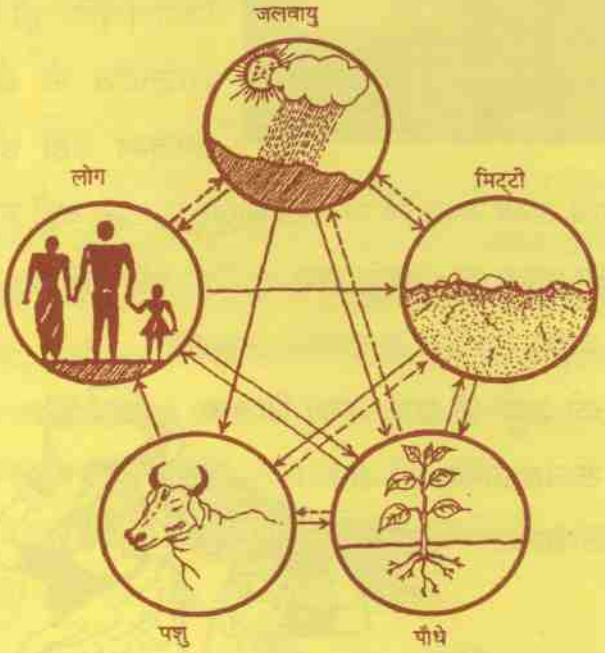

जैविक खेती का लक्ष्य उच्च उत्पादन लेने के साथ–साथ जल, मिट्टी और वायु को प्रदूषित होने से बचाना है। इसके लिए प्रकृति के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अनेक पद्धतियों के प्रयास की आवश्यकता है।

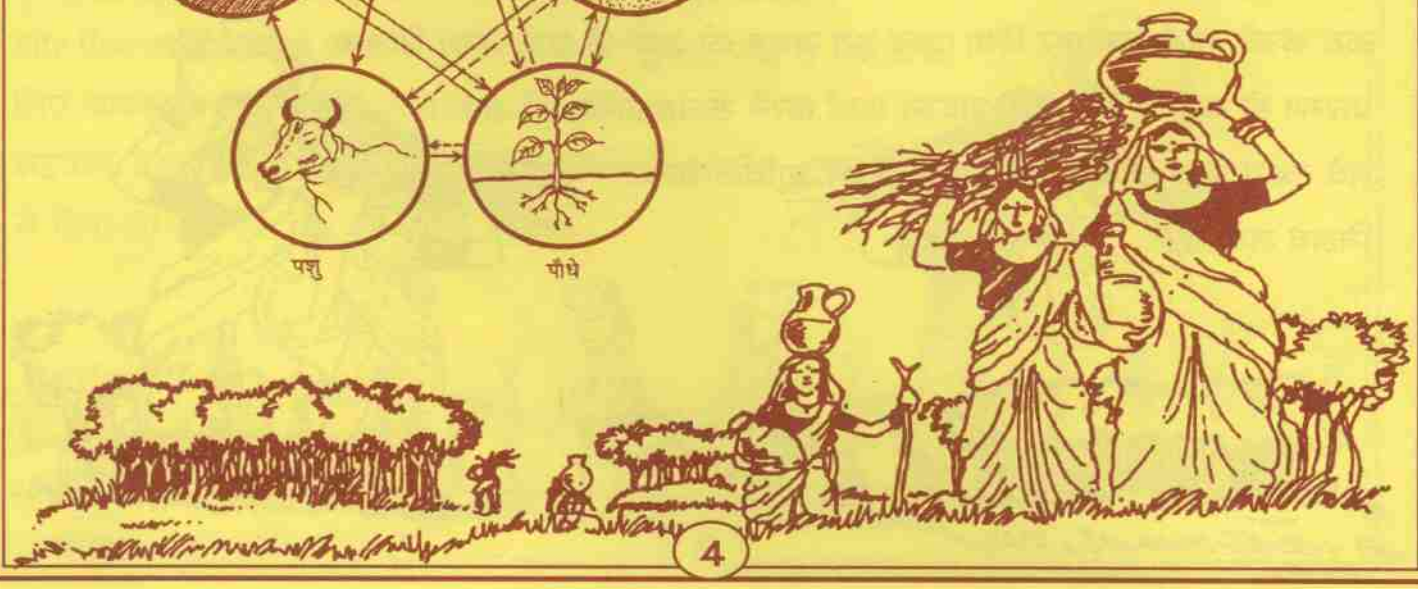

और अंतरखेती या इंटर-क्रापिंग को अपनाएँ। इससे मिट्टी की परतों, स्थान और सौर उर्जा या धूप का अलग-अलग तरह से प्रयोग करना होता है।

- फसल-चक्र में फलियों की फसलों को शामिल करें और राइज़ोबियम का टीका लगाएं।

नाशकजीवों और रोगों का एकीकृत प्रबन्ध

जैविक खेती में फसल को हानि पहुंचाने वाले जन्तुओं की रोकथाम के लिए कृत्रिम रसायनों का इस प्रकार प्रयोग किया जाता है कि ये जंतु फसल को हानि न पहुंचा सकें और रसायनों का कोई बुरा प्रभाव भी न पड़े। इसके लिए नाशक जीवों को पूरी तरह नष्ट करने की बजाय उनकी संख्या को सुरक्षित स्तर पर पहुंचाया जाता है। ये पद्धतियाँ निम्नलिखित है :

- फसल की कटाई के बाद नाशकजीवों को बाहर निकालने के लिए मिट्टी को उलटें।
- मेड़ों और घास की नालियों को साफ करें क्योंकि ये नाशकजीवों को आश्रय देते हैं।
- नाशक जीवों का मुकाबला करने वाली किस्में उगाऐं।
- फसलों को सही समय पर ही बोएं।
- स्वस्थ बीज ही बोएं।

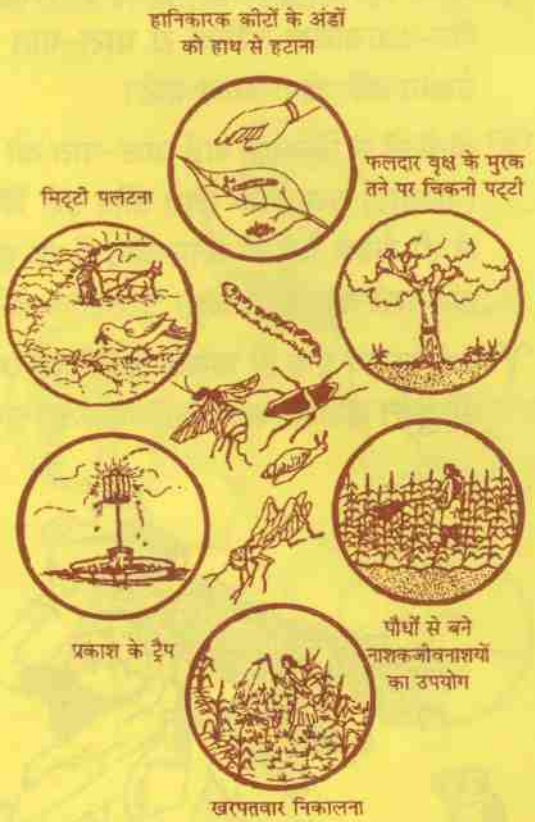

- बीज-दर बढ़ाएं जिससे की बाद में कीट और रोग युक्त पौधों को उखाड़ने के बावजूद भी पौधों की वांछित संख्या बनी रहे।
- नाशक जीवों के अंडों के ढेर, लार्वा के झुंडों, सूँडियों और वयस्क पतंगों आदि को खेत से हटाकर नष्ट करें।
- प्रकाश ट्रैपों (मशाल, पेट्रोमैक्स आदि) का इस्तेमाल करें।

- कीड़ों को रेंग कर ऊपर चढ़ने से रोकने के लिए फल के वृक्षों के मुख्य तने पर चिपकने वाली ग्रीस चारों और लगा दें।
- हानिकारक कीटों को उनके शत्रु कीटों से नष्ट करने के लिए कीट परजीवियों और परभक्षियों को छोड़ें और बैसिलस थूरिंजेंसिस जैसे जैव नियंत्रण एजेन्ट का प्रयोग करें।
- यदि नाशक जीवनाशियों का प्रयोग करना हो तो मुख्यतः केवल पौधों पर आधारित नाशकजीव नाशी जैसे नीम, करंज उत्पाद, रोटेनॉन और पाइरेथ्रिम का ही प्रयोग करें।

मिट्टी और जल का एकीकृत प्रबन्ध

- जल को बरबाद होने से बचाने के लिए सिंचाई जल का दक्षता से प्रयोग करें और पानी के बहने और जमीन से रिसने से भूमि के कटाव और पोषक तत्वों की हानि नियंत्रित करें। इसके लिए :
- अपनी फसलों की तभी सिंचाई करे, जब कि आवश्यकता हो और जल का केवल उतनी ही मात्रा में प्रयोग करें जितना जरूरी हो। उदाहरण के लिए खेतों को छोटे भागों में बांटा जा सकता है। जिनकी अलग से सिंचाई की जा सकती है।
- कभी भी आवश्यकता से अधिक जल का प्रयोग न करें। मिट्टी के पोषक तत्वों को मिट्टी में जड़ के नीचे रिसने से बचाएं।
- अपने खेतों को समतल रखें।
- जल के रिसाव और पोषक तत्वों को जमीन में रिसने से रोकने के लिए कंक्रीट की नालियाँ बनवाने के बारे में सोचें।
- भविष्य में प्रयोग के लिए जल संरक्षण हेतु बाँध, नालियाँ और टैंक बनाएं।
- पलवार (मल्व) का प्रयोग करें, कटूर के साथ-साथ खेती करें और सतह से जल वाष्पन को कम करने के लिए मिट्टी की पपड़ी को तोड़ कर मिट्टी में ही जल संरक्षण करें।

आभार : जैविक खेती शेषाद्री सी.वी. एवम् चित्रा गांधी
पर्यावरणीय दृष्टि से कृषक महिलाओं के लिए
सशक्त प्रौद्यौगिकियाँ
अंतर्राष्ट्रीय कृषक महिला संघ,
नई दिल्ली

परियोजना प्रगति :

समान रूचि समूह

समान रूचि समूहों का गठन	समूहों को आमुखीकरण प्रशिक्षण	समूहों को रेडियो वितरित किये जा चुके है	समूहों को दक्षता प्रशिक्षण	दक्षता प्रशिक्षण चल रहे है	दक्षता प्रशिक्षण शुरू होने जा रहे है
897	321	289	4	3	6

उप परियोजनाऐं :

उप परियोजनाऐं प्राप्त	उप परियोजना स्वीकृत	उप परियोजनाओं में चल रहे कार्यों की संख्या	कितनी उप परियोजनऐं पूर्ण हो चुकी है
340	306	111	14

बुक पोस्ट

सेवा में,

प्रेषक :

"ढाणी की वाणी"

जिला गरीबी उन्मूलन परियोजना

(डी. पी. आई. पी.)

कलेक्ट्रेट, बाराँ (राजस्थान)

फोन : (07453) 235774

फैक्स : 91-7453-235774

मुद्रक : ईगल ऑफसेट, कोटा ☎ 2380006